दर्शन एवं जीवन प्रबन्ध

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

दर्शन का अर्थ है– यर्थाथ दृष्टि। स्वयं के लिए और दूसरों के लिए भी यर्थाथ दृष्टि उचित होती है। दर्शन के माध्यम से हम जीवन प्रबन्ध कैसे कर सकते हैं? आज का युग वैश्वीकरण का युग है। पूरा विश्व एक तन्तु से जुड़ा हुआ है। विज्ञान के आविष्कार ने सम्पूर्ण विश्व को जोड़ दिया है। विज्ञान गति देता है। दर्शन उसे नियंत्रित करता है। केवल गति हानिप्रद हैं। विज्ञान के युग में दर्शन की बहुत आवश्यकता है। प्रत्येक विषय का अपना दर्शन है। किसी भी विषय का सुव्यवस्थित ज्ञान विज्ञान कहलाता है। जीवन दृष्टि सही होनी चाहिए।

मानव जीवन का अपना एक दर्शन है। मानव का जीवन दर्शन है मानवता का विकास। सभी को सम्यक् दृष्टि से देखना, सभी परिस्थितियों में समान रहना सबसे बड़ा जीवन प्रबन्ध है। जीवन में अच्छाइयों को ग्रहण करना और बुराईयों को त्यागना जीवन प्रबन्ध है। जीवन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पालन करना चाहिए। जीवन को सुव्यवस्थित करने के लिए पुरुषार्थचतुष्टय का विधान हमारे देश में है।

भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ की व्यवस्था करके जीवन को सुव्यवस्थित किया गया है। जीवन उसीका सुव्यवस्थित रहता है जो समभाव में रहता है। प्रियता और अप्रियता को त्याग तटस्थता से जीवन जीना चाहिए। सुख–दुःख, लाभ–हानि, जय–पराजय, उत्थान–पतन आने पर धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। समभाव में रहना चाहिए। जो व्यक्ति समभाव में रहना सीख जाता है उसके जीवन से द्वन्द्व समाप्त हो जाते हैं। समभाव या समताभाव जीवन का सबसे बड़ा गुण है। ऋषियों मुनियों का जीवन समभावपूर्ण होता है। उनके लिए संसार में सभी प्राणी समान होते हैं।

भगवान बुद्ध, भगवान महावीर ने राजपाट छोड़कर जीवन का सत्य खोजने के लिए सन्यांस धारण कर लिये। उन्होंने जीवन में अहिंसा का उपदेश दिया। उनका जीवन समभावपूर्ण था। भारतीय संस्कृति में ऐसे मूल्यों को महत्व दिया गया है कि समाज में सभी प्राणी सुखपूर्वक रह

सके। भगवान् महावीर का यह सिद्धान्त है कि हर प्राणी का आदर करो– परस्परोपग्रहोजीवानाम्। इसका अर्थ है सभी प्राणी परस्पर मिलकर सहअस्तित्व के साथ रहें। कोई किसी से बैर न करे, कोई किसी से रागद्वेष न करे। यही इस सूत्र का हार्द्र है। यह संसार सबका है, किसी एक व्यक्ति या प्राणी का नहीं। इसलिए इसका उपभोग सभी संयम पूर्वक करें, कोई किसी के जीवन में हस्तक्षेप न करे।

प्रकृति मानव को सभी चीजे उपलब्ध करायी है। सूर्य का प्रकाश सभी लोगों के लिए है। वायु सभी के लिए है। सम्पूर्ण वायुमण्डल सभी के लिए है, आवश्यकता है इनके सदुपयोग की। यदि मानव त्यागपूर्वक इनका उपयोग करता है तो प्रकृति का खजाना कभी समाप्त होने वाला नहीं है। प्रकृति ने खुब दिया है, इसका त्यागपूर्वक उपयोग होना चाहिए। मानव एक सामाजिक प्राणी है स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की चेतना उसमें समाहित है अहिंसा की वृत्ति भी उसके अंतर्गत है। अहिंसा का तात्पर्य है जीव हिंसा न करना। इसके साथ ही साथ प्राणियों के साथ मैत्री, मुदिता, सहिष्णुता, समता आदि भी अहिंसा के ही पर्याय है।

सादगी का भी अपना एक दर्शन है, इसे हम आत्मशांति का दर्शन कह सकते हैं। जटायु को तड़पता देख श्री रामचन्द्रजी स्वयं विगलित हो गये। उन्होंने सीता को ढूंढ़ना छोड़ दिया और जटायु की सेवा करने लग गये। उस घायल पक्षी को गोद में उठाकर गले लगाया और प्यार से सहलाया। श्री रामचन्द्रजी भी उसका दुःख देख विचलित हो गये। यदि मनुष्य सभी प्राणियों के साथ मेल–जोल सद्भावना और समतापूर्वक रहता है तो उसके जीवन में शांति बनी रहती है।

शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए सहअस्तित्व की कल्पना आवश्यक है। सहअस्तित्व का अर्थ है कि जीवन जितना हमे प्रिय है उतना ही अन्य प्राणियों को भी प्रिय है। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् अर्थात् जो हमारे अनुकूल नहीं है वैसा आचरण हमें दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए। यदि हम किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप किसी अन्य प्राणी के जीवन में करते है तो उसको दुःख होता है। इसलिए प्रेम से और सद्भावना से किसी भी प्राणी को वश में किया जा सकता है।

अहिंसा से लेकर जियो और जीने दो का सिद्धान्त ही शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की मुख्य धुरी है। आचार शुद्धि, व्यवहार शुद्धि और विचार शुद्धि के आधार पर मनुष्य बिना किसी अतीन्द्रिय सत्ता के सहयोग से स्वयं को विकसित बना सकता है। दया और करुणा का भाव ही शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के मूल में प्रतिष्ठित है। अतः शांतिपूर्ण सहअस्तित्व कोरा दर्शन न होकर जीवन दर्शन है, जो किसी भी जीव के अस्तित्व व गरिमा को स्थापित करता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदना व दया, करुणा का भाव समस्त सृष्टि के जीवधारियों के लिए होता है। अतः अहिंसा इस दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए सबसे अनिवार्य शर्त है। धर्म दर्शनों में धर्म के व्यावहारिक स्वरूप को मानव जीवन के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है, इसलिए इन दर्शनों में धर्म के रूप में कर्म को प्रधानता दी गई है। इस प्रकार दर्शन एवं जीवन प्रबन्धन में घनिष्ठ सम्बन्ध है।